जय राम जय राम

सत्य साहित्य

जय जय राम

नई श्रृंखला
अंक 2
नं० 2
अप्रैल 2014

मूल्य ₹ 5

सत्य साहित्य, श्री रामशरणम् इन्टरनेशनल सेन्टर, नई दिल्ली की एक त्रैमासिक पत्रिका

सर्वशक्तिमते परमात्मने श्री रामाय नमः

३५

श्याम पिया मोरी रंग दे चुनरिया
राम " " " " "

(1) ऐसी रंग दे कि रंग नाहिं छूटे
धोबिया धोये चाहे सारी उमरिया
श्याम ....

(2) लाल रंगवाऊं न, हरी रंगवाऊं
अपने ही रंग में तू रंग दे सांवरिया
श्याम ....

(3) बिना रंगवाये मैं घर नहीं जाऊंगी
बीत जाये चाहे सारी उमरिया
श्याम ....

(4) मीरा के प्रभु गिरधर नागर,
हरि चरणों में लागी नजरिया.
श्याम ....

" मैं होली खेलन आई रे बाबा तेरे आंगना
तेरे आंगना रे बाबा तेरे आंगना "
कर दे लालो लाल रे बाबा ~~[illegible]~~ कर दे लालो लाल,
मैं होली खेलन आई रे बाबा तेरे आंगना "

(परम पूज्य महाराज जी की भजन डायरी से)

इस अंक में पढ़िए

- भजन
- बधाई
- साधना में बाधाएँ
- प्रश्न-उत्तर
- अनुभूतियाँ
- विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम
- बच्चों के लिए
- परम पूजनीय स्वामी जी महाराज के संस्मरण
- कैलेंडर

सत्य साहित्य

युग पुरुष को लख लख बधाई!

शाश्वत गुरुश्रेष्ठ, परम पूजनीय, सदा स्मरणीय
स्वामी सत्यानन्द जी 'सरस्वती' को
उनके मँगलमय जन्मदिवस एवं होली पर
लख लख बधाई, शत् शत् नमन।

वर्तमान युग के विशुद्ध आध्यात्मिक संत

पूज्यपाद श्री स्वामी जी महाराज 20 वीं सदी युग–परिवर्तनकारी, ब्रह्मज्ञानी, सिद्ध तथा उच्च–कोटि के महान् योगी सद्गरू सन्त थे। पूज्यपाद एक विलक्षण एवं अद्वितीय प्रतिभा–सम्पन्न व्यक्तित्व के धनी थे। प्राचीन सन्त–परम्परा में अध्यात्म–विद्या की सरलतम व श्रेष्ठतम अनुभूत राम–नाम की साधना–प्रणाली में योगदान करने वाले वर्तमान युग के महान् सत्पुरुष थे। जिनका सान्निध्य व सम्पर्क प्राप्त कर हम धन्य हुए और परम सौभाग्यशाली बने हैं।

स्वामी जी ने कोई गुरू–पूजा नहीं चलाई और वे गुरू को भगवान नहीं मानते थे। वे इतने सरल थे कि शिष्यों को अपना मित्र मानते थे। पूज्यपाद ने परमधाम से प्रभु–कृपा से 'राम–नाम' की दीक्षा प्राप्त कर कलिकाल के सन्तप्त जनों के कल्याणार्थ अन्तरात्मा से नाम–दीक्षा देने का मार्ग प्रशस्त किया।

आपने गीता के भक्तिमय कर्मयोग के अन्तर्गत सिमरन और सेवा पर बल दिया – राम–राम भजकर श्रीराम। करिए नित्य ही उत्तम काम।।

आपने भक्ति–योग, कर्म–योग, ज्ञान–योग का आचरण में सुन्दर समन्वय कर दिखाया। हम आपके जीवन की सम्पूर्ण क्रिया–कलाप से पग–पग पर गीता और रामायण के उपदेश सीखते थे।

मत, पंथ, सम्प्रदायों से ऊब चुके लोगों को धार्मिक से आध्यात्मिक बनाने के लिए आपने विशुद्ध आध्यात्मिक सत्संग केन्द्र 'श्रीरामशरणम्' की स्थापना की। व्यावहारिक जीवन में 'अध्यात्म' को कैसे लाया जाए? आपने इसका विधिवत् प्रशिक्षण साधना–सत्संगों के माध्यम से साधकों को देना आरम्भ किया जिसमें, हम संयमित जीवन जीने की कला सीखते हैं। आपके सभी ग्रंथ तथा रचनाएँ अवतरित हैं। आपने बाल्मीकीय रामायण सार, श्रीमद्भगवद्गीता पर भाष्य तथा आपकी मौलिक कृति भक्ति प्रकाश की रचना कर आपने समाज को एक नवीन राष्ट्रीय जीवन–दृष्टि प्रदान की। गीता की विवेचना एक जीवनशास्त्र के रूप में करने के साथ ही रामायण को ऐतिहासिक दृष्टि से जनमानस के समक्ष प्रस्तुत किया। ऐसे आडंबर से बचाकर मुक्ति के मार्ग को हमारे लिए सहज सरल और सुगम बनाने वाले ऐसे राष्ट्र संत के जन्म–दिवस पर हमारी सच्ची कृतज्ञता यही होगी कि हम अपने जीवन को स्वामी जी के पथ–अनुसार बनाएँ। हमें जीवन में समुन्नति के लिये निष्काम–भाव से सभी कर्तव्य–कर्म करते हुए आत्म–ज्ञान प्राप्त करने हेतु साधना–पथ पर अग्रसर होते जाना है। हम सबको गुरुभाव बनाए रखना है। सद्गुरु के चरणों में सादर नमन! ■

Facebook Group: https://www.facebook.com/groups/shreeramsharnamnewdelhi/
Community page: https://www.facebook.com/ShreeRamSharnam.AmritvaniSatsang.NewDelhi

आनन्द ही आनन्द बरस रहा

आनन्द स्वरुप गुरु विश्वामित्र जी महाराज के जन्मदिवस पर आपको लख लख बधाई!

महर्षि स्वामी डॉ. विश्वामित्र जी महाराज का जन्म दिवस हमेशा माँ को समर्पित रहता था। यह वह समय होता था जब महाराज जी पूरी उत्कटता से अपने जीवन, साधना और स्वामी जी महाराज की परम्परा के बारे में अन्तर्मन्थन किया करते थे। दूसरों को उनके जन्मदिवस पर वे पूरे स्नेह और हर्ष के साथ बधाई दिया करते थे। इसी प्रकार अपने जन्मदिन पर भी मिलने वाली बधाइयों का पूरे उल्लास के साथ अभिनंदन करते थे।

मुझे याद है, जब भी सम्भव होता, अपने जन्मदिवस पर मैं उनसे आशीर्वाद लेने ज़रुर जाता। एक बार मैंने उनसे कहा, ''तारीख के हिसाब से मैं आपसे उम्र में तीन दिन बड़ा हूँ, इसलिए आपके जन्म दिवस की बधाई मैं पहले ही दे रहा हूँ।'' वे खुल कर हँसे और मुझे आशीर्वाद दिया। 11 मार्च 2012 के दिन मुझसे कहा, ''प्रत्येक वर्ष आज के दिन मैं आप का इंतज़ार करुँगा...।'' हाँ, सूक्ष्म रुप में वे आज भी अपना वायदा रखते हैं।

पहली बार, मैं इस बात को सार्वजनिक कर रहा हूँ कि पिछले कुछ वर्षों में महाराज जी से मुझे पाँच अद्वितीय उपहार मिले। उन्होंने मुझे मिठाई खिलाई, एक बार अपना शॉल मेरे कंधे पर डाला; फिर फल और गुलाब भी दिए। फिर भी उनका सबसे प्रभावशाली और अंतिम उपहार था, जब पहली बार उन्होंने लोगों की मासूमियत में मुझे 'जादुई राम' से साक्षात्कार कराया।

एक बार उन्होंने मुझसे कहा,''... आकर मुझसे मिलना। मैं लोगों से मिलता हूँ और उनसे उनकी ज़िन्दगी के बारे में बातें तो करता हूँ, परन्तु ऐसा कोई नहीं है जिससे मैं अपनी ज़िन्दगी के बारे में और अपने मन की बात कर सकूँ।'' उस दिन मुझे अहसास हुआ कि मेरे दोस्त, दार्शनिक और मार्गदर्शक अध्यात्म के शिखर पर नितान्त अकेले थे। एक अन्य अवसर पर उन्होंने कहा था कि सर्वशक्तिमान परमात्मा के लिए वे घोर विरह की पीड़ा अनुभव करते हैं।

परम पूजनीय महाराज जी एक साधक की भान्ति परम पूजनीय प्रेम जी महाराज के लिए उनके जन्मदविस पर जाप किया करते थे। एक बार उन्होंने कहा,''मैं जाप की गिनती करने में बहुत समय लिया करता था और दूसरों की तरह बड़ी संख्या में जाप नहीं कर पाता था...।'' दरअसल उनका अभिप्राय यह था कि वह पूरे भावात्मक अतिरेक के साथ जाप किया करते थे। 'राम भाव' और 'प्रेम भाव' के साथ जाप करते हुए उन्हें इस बात का तनिक भी ध्यान नहीं रहता था कि वे एक मनके पर कितनी देर रुके रहते थे। ऐसा था उनका 'राम भाव' और गुरुजनों के प्रति श्रद्धा।

'जादुई राम' से साक्षात्कार करने के बाद मैंने उन्हें महर्षि कह कर सम्बोधित किया। वे स्वीकृति में मुस्कुराए। निःसंदेह वे महर्षि स्वामी डा. विश्वामित्र जी महाराज थे। 15 मार्च, 2014– अपने परम प्रिय महर्षि जी को उनके जन्म दिन पर 'राम नाम' परिवार की ओर से आत्मिक प्रणाम। ■

परम पूजनीय श्री महाराज जी के जन्मदिवस पर उनको बच्चों द्वारा दिए गए कुछ कार्ड

Facebook Group: https://www.facebook.com/groups/shreeramsharnamnewdelhi/
Community page: https://www.facebook.com/ShreeRamSharnam.AmritvaniSatsang.NewDelhi

साधना में बाधाएँ

परम पूजनीय स्वामी जी महाराज द्वारा अपने भक्तों को साधक कहना एक विशिष्ट बात थी। ऐसा करना यह दर्शाता था कि उनकी दृष्टि में साधारण गृहस्थ के जीवन का केन्द्र भी साधना था। साधक कह कर संबोधित करने के पीछे ध्येय भी, शायद अपने भक्तों को आध्यात्मिक उन्नति के लक्ष्य का सतत् स्मरण करवाना था। अतः स्वामी जी महाराज ने दुष्कर आध्यात्मिक मार्ग को हमारे लिए न केवल अत्यन्त सुगम बनाया बल्कि उन्होंने उपासना में आने वाली बाधाओं से भी हमें परीचित कराया, ताकि हम अपनी साधना में निर्बाध रुप से प्रगति कर सकें।

साधना में विरोधी शक्तियाँ

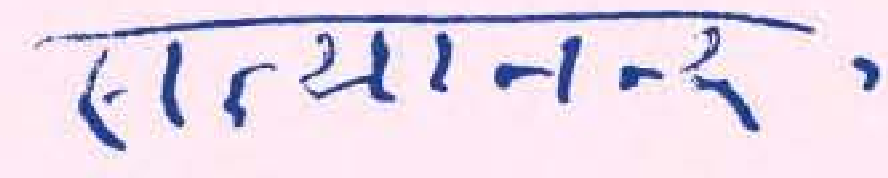

साधन में जब कोई बढ़ने लगता है तो प्रकृति विरोध करती है। प्रकृति बाहर की चीज़ में भी होती है और अपने संस्कारों की बनी हुई भी होती है। यह संस्कार बहुत प्रबल होते हैं और जीने के लिए हठ करते हैं। इनसे दबना नहीं चाहिए बल्कि इनको दबाना चाहिए। इनसे दबने पर यह जी जाएँगे और हमें गिरा देंगे। यह कई वर्षों से और अनेक जन्मों से चले आते हैं और हम पर अधिकार जमाए हुए हैं। यह कई रुपों में भय से, प्रलोभन से और मोह का रुप धर कर, हमें गिराने और बहकाने की कोशिश करते हैं। पर हमें इनका मुकाबला करना चाहिए और अपने साधन में डटे रहना चाहिए। ऐसा करने से वे कमज़ोर होते जाएँगे और हम अपने साधन में दृढ़ होते जाएँगे। कैसी भी अवस्था हो, साधक को कभी चलायमान नहीं होना चाहिए।

मोह का संस्कार भी बड़ा भयंकर होता है। मोह कई प्रकार का होता है। धन का मोह, तन का मोह, सम्बन्धियों का मोह आदि। यह साधक के पाँवों को जकड़ लेता है। उसको आगे बढ़ने नहीं देता। यह उसको आगे बढ़ने से रोकता है, पर साधक तो सूरमा होता है। उसको इसे जीतना चाहिए। माया बहुत बलवती होती है। बड़े बड़े ऋषि मुनियों को चलायमान कर देती है। शेर और चीते को जीत लेना सुगम है, दुनिया को जीत लेना सुगम है, पर माया को जीतना बहुत कठिन है। इसको जीतना बड़े सूरमों का काम है। इसको जीतना चाहिए, ध्येय के लिए।

पर जहाँ विरोधी शक्तियाँ काम करती हैं, वहाँ भगवत् कृपा भी सदा सहायता करती है। जहाँ शैतान आता है, वहाँ खुदा भी आता है। अशुभ के साथ शुभ भी आया करता है। भगवत्कृपा की अनुभूति साधक को कई प्रकार से होती है। कभी कभी शाब्दिक आशीर्वाद भी होता है। यह कभी एक बार भी हो जाए तो साधक हिमालय की तरह दृढ़ हो जाता है। कई बार साधक को विलक्षण अनुभव होते हैं, पर वह उनके महत्व को नहीं समझता और उनको यूँ ही समझ कर उनकी अवहेलना कर देता है। इससे उसकी उन्नति रुक जाती है। उसका नीचे चले जाना भी संभव है फिर जो बात बनी होती है वह नहीं रहती। दुबारा उसके लिए बहुत प्रयत्न करना पड़ता है। इसलिए अपने मार्गदर्शक से मिलते रहना चाहिए और उसको अपनी आंतरिक स्थिति से परीचित कराते रहना चाहिए इसलिए महापुरुष सत्संग का महात्म्य मानते आए हैं।

अपनी जागृति का निश्चय होना चाहिए। यह मार्ग निश्चय व विश्वास का मार्ग है। कोई लाख कहकर विरुद्ध बहकावे, साधक को अपना आप कायम रखना चाहिए। साधक जब मैदानों में जाए, सबकी सुने पर अपने आपको खोए नहीं। उसका निश्चय बलवान होना चाहिए। ■

(स्त्रोतः श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज के अमृत बिन्दु, राम सेवक संघ, ग्वालियर, विजयदशमी 1961)

Facebook Group: https://www.facebook.com/groups/shreeramsharnamnewdelhi/
Community page: https://www.facebook.com/ShreeRamSharnam.AmritvaniSatsang.NewDelhi

आराधना में कमज़ोरी

महाराज (स्वामी जी) कहा करते थे, परमेश्वर के इतने नाम हैं, उतने ही नाम देने वाले हैं, मैं उन सबको नमस्कार करता हूँ। परन्तु मुझे तो परमेश्वर दरबार से यह नाम प्राप्त हुआ है–इसलिए इसके आराधन से अवश्य सभी का कल्याण होगा–यदि लाभ नहीं होता–तो उसे अपने अन्दर टटोलना चाहिए–कि मेरे अन्दर क्या कमी है–नाम तो बड़ा शक्तिशाली है–हमारी कमज़ोरी ही होती है।

निन्दा–वैर–विरोध के काँटे – अपनी बड़ाई करना – जब तक यह दूर न हों–हो सकता है, नाम का बहुत प्रभाव न हो। जब कोई मैली जगह हो, तो बैठने को मन नहीं करता– तो परमेश्वर गन्दे मन में कैसे बैठे? अभ्यास से सब बातें दूर हो जाती हैं। मन में यह विचार होना चाहिए कि मुझे यह बुराई दूर करनी है–जब वैर द्वेष रखते हैं तो परमेश्वर से वैर करते हैं।

महाराज (स्वामी जी) ने सबको आदर दिया, अपने आपको दास ही समझा। प्रातः मालिश किया करते थे,एक बार मैंने कहा कि मैं मालिश कर दूँ। महाराज कहने लगे, "अपना हाथ जगन्नाथ।" हम अपने आपको बड़ा समझते हैं, बड़ा मनवाते हैं, जब तक यह बुराई दूर न हो–लाभ न हो। नाम तो बहुत शक्तिशाली है–वह फिर भी कृपा करते हैं–यदि राम कृपा न हो तो एक कदम भी न उठाया जा सके। अपने अवगुण ही निहारें–न कि दूसरों के– दूसरों की निन्दा करके उनके अवगुण अपने अन्दर आ जाते हैं–श्री राम के बारे में महाराज ने कहा कि कोई कुछ करे–तो बहुत याद करते। कोई निन्दा करता–तो ध्यान न देते। यह महापुरुषों में गुण होते हैं। अवगुण दूर करने का यत्न करें। परमेश्वर तू बख्श दे–कृपा कर। महाराज कहते कि क्षण भर के लिए भी उसके नाम में लीनता हो जाए–तो पाप दूर हो जाते हैं। यह तो परमेश्वर से ही माँगना चाहिए। बाल भाव से माँग माँगने से भी श्री राम अवश्य कृपा करेंगे–प्रभु तो बहुत दयालु हैं–जैसे माँ बाप होते हैं–परमेश्वर श्री राम तू कृपा कर –कृपा कर।

(परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज के श्रीमुखारविन्द से 15.7.1970, परम पूजनीय श्री विश्वामित्र जी महाराज द्वारा नोट किए गए प्रवचन)

उपासना में बाधाएँ व समाधान

विश्वामित्र

इस संसार में गरीब भी दुःखी है, अमीर भी दुःखी है, ***नानक दुखिया सब संसार***। कर्मचारी भी दुःखी है, व्यापारी भी दुःखी है, काम करनेवाला भी दुःखी है, जिसके पास काम नहीं वह भी दुःखी है, संतानवाला भी दुःखी है, निःसंतान भी दुःखी है, प्रधानमंत्री भी दुःखी है, तो एक गरीब आदमी भी दुःखी है, भिखारी भी दुःखी है, कोई ऐसा व्यक्ति इस संसार में दिखाई नहीं देता जो दुखी न हो। सन्तों महात्माओं ने कहा, अनेक कारण हैं इस दुःख के। परमेश्वर की सृष्टि में दुःख नहीं है। दुःख है तो मानव की सृष्टि में, यह दुःख उसके शब्दकोष में है, परमेश्वर के शब्दकोष में दुःख नाम की कोई चीज़ नहीं है। इसके मूल में एक कारण है जो संतों महात्माओं ने खोज निकाला है, वह है परमेश्वर का विस्मरण–जब परमात्मा को भूल जाता है तो दुःख आकर रहेगा, छुटकारा नहीं है। परमेश्वर का विस्मरण होता है तो अपने भीतर जो शत्रु हैं, आपने बेशक किसी कारण से उन्हें कमज़ोर कर रखा है, वे आँख दिखाने लग जाते हैं। परमेश्वर का स्मरण होने से भीतर बैठे हुए शत्रु बड़े भयभीत रहते हैं, सिर नहीं उठा सकते। इसलिए न स्वयं को दुःख पहुँचा सकते हैं न औरों को दुःख देने देते हैं। विस्मरण में आदमी स्वयं भी दुःखी होता है एवं औरों को भी दुःखी करता है। घर में एक व्यक्ति के कारण अशान्ति है, पूरा घर नरक होता है, सभी दुःखी होते हैं। कहते हैं– जितनी जिस की याद आती है उसके उतने ही गुण हमारे अन्दर बसने लग जाते हैं। परमेश्वर को निरन्तर याद करोगे तो परमेश्वर के गुण तुम्हारे अंदर समा जाएँगे। परमात्मा प्रेम स्वरुप है, शान्ति स्वरुप है, आनन्द स्वरुप है, सच्चिदानन्दघन है, क्षमावान, दयावान, करुणावान, परमकृपा स्वरुप है। ये गुण एक–एक करके अपने भीतर बसते जाएँगे, तो जीवन अति सुखी होता जाएगा। परमेश्वर का स्मरण रहता है तो व्यक्ति के विचार, उसकी वाणी, कर्म सब के सब, परमेश्वर से प्रेरित हुआ करते हैं। परमेश्वर का विस्मरण होता है, तब वही वचन, विचार, कर्म स्वार्थ से प्रेरित होते हैं, अभिमान से प्रेरित होते हैं। मोह से प्रेरित कर्म किसी को सुख नहीं दे सकता। अपने जीवन को सुखी बनाना चाहते हो, औरों को सुख पहुँचाना चाहते हो तो परमेश्वर का सतत् स्मरण करते रहो। विस्मरण और स्मरण, भूलना और याद करना। स्वामी जी की रचनाओं में एक विशेषता है, वे विरक्त के लिए भी हैं, और गृहस्थ के लिए भी। गृहस्थ ही दुःखी है, विरक्त को इतने दुःख नहीं, जितने गृहस्थ को हैं। अपने गृहस्थ को बैकुण्ठ किस प्रकार बनाया जाए? परमेश्वर का सतत् स्मरण करोगे 'सपने में भी न बिसरे नाम' ऐसी स्थिति आनी चाहिए। क्या बैठ कर किसी कोने में स्मरण करना होगा? न, ऐसा नहीं कहा उन्होंने, चलते–फिरते, काम करते, सैर करते, उठते–बैठते, सोते–जगते, खाते–पीते हर वक्त प्रयत्न कीजिएगा। वे सब कुछ भी होता रहे और परमात्मा का स्मरण भी होता रहे। ऐसी साधना, ऐसा उपदेश कहीं और नहीं है। ऐसा नहीं कि ऐसी साधना करने के बाद किसी को परमधाम नहीं मिला, वह भी मिला है। राम नाम चौबीसों घंटों उच्चारण करते रहिएगा। स्वामी जी मन को अवारागर्द कहते हैं। इस अवारागर्द मन से इतना राम को याद करिएगा कि यह मन कहीं अवारागर्दी करने के लिए न जाए। कितना सरल साधन है। आदमी योग करता है, नाक मुँह सिकोड़ता है, प्राणायाम करता है, स्वामी जी कहते, "जो कह रहा हूँ, वह करो, घर बैठे ही कल्याण को कोई रोक नहीं सकता। जिस दिन हाथ से काम होने लग जाएगा और मुख से राम निकलने लग जाएगा, समझ लेना कल्याण होने वाला है।" अनेक उदाहरण हैं जिन्होंने परमेश्वर का नाम स्मरण किया एवं सबको परमेश्वर रुप देखकर उनकी सेवा की। जब नाम का जाप करोगे तो सेवा किए बिना रह नहीं सकोगे। कोई पाप रहता ही नहीं, व्यक्ति परमेश्वर का स्मरण करता हुआ पाप करता है तो वह पाप नहीं रहता। विस्मरण करता हुआ पुण्य भी करता है तो वह पुण्य नहीं रहता, क्योंकि वह पुण्य भी अभिमान देकर जाता है। कितना बल है परमेश्वर के स्मरण में। जो स्मरण करेगा, परमेश्वर के नाम का उच्चारण करेगा वह इन सबको परमेश्वर देखकर इनकी जी जान से सेवा भी करने लग जाएगा।

मातेश्वरी अनुसूया की शिष्या हैं–भक्तिनी शाण्डिली सती। कौशिक की पत्नी है, वह बड़ा क्रोधी स्वभाव का है। क्रोध से तो कोई बचता नहीं है कौशिक ब्राह्मण है, पूँजीपति है, व्यसनी है। ऐसा नहीं कि हर पूँजीपति व्यसनी होता है, पर कुछ न कुछ रोग तो उन्हें लगा ही रहता है। बड़ा क्रोधी है अपनी पत्नी को प्रायः फटकारता रहता है, वह जी जान से सेवा करती है। अपने कर्मों के अनुसार वह कोढ़ी है, चल नहीं सकता, *बाथरुम*

इत्यादि नहीं जा सकता, इसलिए मल मूत्र से गंदे कपड़े शाण्डिली ही धोती है, भोजन करवाती है, मानो जो कुछ भी उसे स्वयं करना चाहिए वह सब पतिव्रता शाण्डिली करवाती है। ऐसी सती को वह फटकारता है। एक वेश्या के प्रति उस की आसक्ति है, अपने पति की आज्ञानुसार रोज रात उसे कंधों पर उठा कर वैश्या के मकान पर छोड़, रात भर नीचे प्रतीक्षा करती, और भोर होते ही अपने पति को कंधों पर उठाकर घर ले आती है। एक पुत्र है, योगी है एकांतवास करता है, अनेक सिद्धियों का मालिक है, घर नहीं आता, आज एक पेड़ के नीचे बैठा हुआ समाधिष्ठ है। कुछ एक चोर राजघराने से चोरी करके आ रहे है, उनके पीछे पुलिस लगी हुई है। सारा सामान इस योगी के पास छोड़ जाते हैं, योगी पकड़ा जाता है। कोई पूछताछ नहीं, वहीं पर फाँसी पर लटका दिया जाए। उसी पेड़ पर फाँसी लगाने का हुक्म हो गया। संयोगवश यह वही रास्ता है, जहाँ से रोज़ शाण्डिली अपने पति को कंधों पर उठा कर लाती है। आज योगी लटका है, मरने की तैयारी है, थोड़ा अँधेरा है, शाण्डिली को ठीक दिखाई नहीं दिया, उसके पति का सिर योगी को छू गया। योगी को क्रोध आ गया। कौन है, जो मुझे आराम से मरने भी नहीं देता। शाप दिया, सूर्य उदय होने से पहले तेरी भी मृत्यु हो जाएगी। शाण्डिली कहती है, "क्षमा कीजिए महाराज ! दोष तो मेरा है जिसके कंधों पर ये विराजमान हैं, इसलिए शाप मुझे दीजिए।" योगी और क्रोधित होता है, "मेरे शाप को कोई झुठला नहीं सकता। सूर्योदय से पहले उस की मृत्यु हो जाएगी।" सती का सतीत्व जागा, नाम की उपासना की हुई और पति की सेवा की हुई, शाण्डिली ने इन दोनों चीज़ों के अतिरिक्त कुछ नहीं किया। कहा, "कल का सूर्य उदय होने नहीं दूँगी।" तीन दिन तक सूर्य उदय नहीं हुआ। सभी देवी देवता परेशान हो रहे हैं। शाण्डिली को मनाना बहुत मुश्किल है, इसलिए शाण्डिली की गुरु मातेश्वरी अनसुया के पास जाते हैं। "मातेश्वरी ! कृपा कर अपनी शिष्या को मनाओ, तीन दिन से सूर्य उदय नहीं हुआ।" गुरु आज्ञा को कौन टाले, अच्छा शिष्य तो नहीं टालता, अच्छा शिष्य जिसे कहा जाता है, वह परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन कर सकता है, पर गुरु की आज्ञा का नहीं। सब ऋषि मुनि इक्ठ्ठे होकर इसी विश्वास से, मातेश्वरी अनुसूया के पास गए, उन्होंने कहा, "सूर्य को छोड़ दे, तेरे पति को मैं जिन्दा करवाऊँगी।" शाण्डिली सूर्य उदय होने देती है, पति का शरीर छूट जाता है, मृत्यु हो जाती है। पति भी प्रायश्चित कर रहा है, क्षमा माँग रहा है। मातेश्वरी अनुसूया ने पति के प्राण लौटाए, स्वस्थ युवक बन गया ब्राह्मण कौशिक। वह शाण्डिली के पैर पकड़कर माफी माँगना चाहता है, सती कहती है, "महाराज सच मानिए यह आपकी सेवा का प्रताप है।" जो नाम जपता है, वह सब में नामी को देख कर उसकी सेवा भी करता है। परमेश्वर का सिमरन कीजिए, सतत् सिमरन कीजिए। क्या यही पर्याप्त है? नाम की उपासना तुरंत और बड़ी सुगम फलवती हो जाएगी, भरपूर लाभ होगा। नाम आप पर अपना रंग चढ़ाए बिना रह नहीं सकता। स्वयं वह इतना रँगीला है कि रंगे बिना नहीं रह सकता।

जो घट रहा है राम इच्छा से घट रहा है,यह बात पक्की होनी चाहिए। मन से, वाणी से, शरीर से परम शुचिता होनी चाहिए, परम पवित्रता होनी चाहिए अपने जीवन में। तब झोली में राम बिठाते हैं, तब झोली में राम बैठते हैं।

कुछ बातों का ध्यान रखने की आवश्यकता है :

सर्वप्रथम, नाम का जाप इस प्रकार करिएगा कि परमेश्वर का सतत् सिमरन बना रहे। हमारी उपासना तो बार–बार उच्चारण करना ही है। ध्यान, भजन कीर्तन तो हम बहुत कम करते हैं, मुख्य उपासना तो हमारी बार–बार नाम का उच्चारण करना है जिसे जाप कहते हैं। जाप इस प्रकार से, इतना करिएगा कि परमात्मा का सिमरन नित्य बना रहे, सतत् बना रहे।

दूसरा, मन में तड़प इस प्रकार की होनी चाहिए कि एक राम के अतिरिक्त कुछ नहीं चाहिए। मानो कोई पूछे आप से आप नाम की उपासना क्यों कर रहे हैं ? धन उपार्जन के लिए, व्यापार के लिए, संतान अच्छी निकले, और संतान आ जाए, मान–सम्मान के लिए, किस चीज़ के लिए कर रहे हैं, तो उत्तर हो, इन में से किसी भी चीज़ के लिए नहीं। राम के अतिरिक्त हमें कुछ नहीं चाहिए इसलिए नाम की उपासना कर रहे हैं।

तीसरी बात, सब में राम है, राम में सब है और सब राम है। कठिन बातें हैं करने के लिए, इन्हें जीवन में उतारना बहुत कठिन, पर लाभ भी तो देखिएगा। परमात्मा आपकी मुट्ठी में हो जाएगा। यह उपलब्धि कोई कम तो नहीं। सौ रुपया दिन का कमाना होता है तो व्यक्ति सुबह से घर से काम पर निकलता है, रात को थका मांदा आता है, तब जा कर मामूली से नश्वर कुछ नोट मिलते हैं। यहाँ तो अनश्वर, शाश्वत चीज़ प्राप्त होने वाली है। इसके लिए यदि इतना नहीं कर

सकते हो तो फिर किस चीज़ के लिए करोगे ? जिन चीज़ों के लिए कर रहे हो, उन से तो पेट भरने वाला है नहीं। उनसे आपकी माँगें पूर्ण होने वाली नहीं जितना मर्ज़ी करते रहिएगा। सब कुछ भी मिल जाए, यदि परमेश्वर के चरणों में प्रीति नहीं है तो जीवन में अभाव सदा खटकता रहेगा। सब कुछ है लेकिन ऐसा लगता है अभी जो कुछ होना चाहिए था, वह नहीं हुआ। मानो जन्म–जन्म भी इस प्रकार बीत रहे हैं, इस कारण अभाव अभी भी खटक रहा है। सब में राम है, राम में सब हैं, राम ही सब कुछ है, सब राम का है, यह तीसरी बात जीवन में आनी चाहिए।

चौथी बात है जो संसार में घट रहा है, राम की परम इच्छा से घट रहा है। यह बातें असम्भव नहीं हैं कठिन ज़रुर हैं, जो संतो महात्माओं ने जीवन में उतारी हुई हैं। जो घट रहा है राम इच्छा से घट रहा है,यह बात पक्की होनी चाहिए। मन से, वाणी से, शरीर से परम शुचिता होनी चाहिए, परम पवित्रता होनी चाहिए अपने जीवन में। तब झोली में राम बिठाते हैं, तब झोली में राम बैठते हैं।

कुछ एक बाधाएँ हैं जो इन बड़ी–बड़ी बातों को हमारे जीवन में उतरने नहीं देती, नाम का रंग चढ़ने नहीं देती। वे क्या हैं ?

सर्वप्रथम, गुरु में अविश्वास – यही नहीं पता हमारा गुरु कौन है। बड़ी दुविधा, स्वामी जी महाराज हैं या प्रेम जी महाराज? बड़े–बड़े लोगों को यह दुविधा है। इस को कहते हैं गुरु में अविश्वास, उनकी करनी में अविश्वास, उनकी कथनी में अविश्वास। अब अविश्वास है तो अगला जन्म मिलने के लिए तैयार रहिएगा। गुरु में अविश्वास है तो परमात्मा में भी अविश्वास। जब तक आपका कहना मान रहा है तब तक विश्वास, जब आपके कहने के अनुसार नहीं हुआ तब अविश्वास।

नम्बर दो पर रखा है ईर्ष्याग्नि – अनेक दुर्गुणों में से एक दुर्गुण चुना है। क्रोध को तीसरे नम्बर पर रखा है, ईर्ष्याग्नि रखी है दूसरे स्थान पर। पहले सभी बाधाओं के नाम सुन लीजिए गुरु में अविश्वास, ईर्ष्याग्नि, क्रोधाग्नि, हमेशा दूसरों के दोष देखते रहना। वैसे तो यह ईर्ष्याग्नि के अन्तर्गत आता है पर संतो महात्माओं ने इसे चौथे स्थान पर अलग से रखा है। समझ लीजिए राम रुपी फुलवारी में फूल तो कभी–कभी दिखाई देते हैं काँटे तो सदा दिखाई देते हैं, क्या करें हमारी दृष्टि काँटों तक सीमित रहती है। फूल देखने योग्य हमारी दृष्टि नहीं, दोष दिखाई देते हैं। नम्बर पाँच अपने शरीर से किसी दूसरे को हिंसा पहुँचानी, चोरी इत्यादि। अंतिम बात असंयमी जीवन, जिसका जीवन मर्यादित नहीं है, उसकी साधना आसानी से सफलीभूत नहीं होती। असंयमी जीवन विनाश की ओर ले जाता है और संयमी जीवन परमेश्वर की ओर, विकास की ओर ले जाता है। एक विकास की ओर, दूसरा विनाश की ओर।

ईर्ष्याग्नि – ईर्ष्या की अग्नि। घर–घर की बीमारी है, हर इन्सान की बीमारी है, सामान्य व्यक्ति की, वैरागी की, पापी की, संतों महात्माओं की, गुरुओं की, कोई इस रोग से मुक्त नहीं। कैसा भयानक रोग है ? एक साधक ऐसा होना चाहिए, जो दूसरे भक्त को देख कर उसकी प्रशंसा ही प्रशंसा करे, उसके ऊपर प्रसन्न हो, वाह ! परमात्मा तेरा कोई और भक्त भी है मेरे अतिरिक्त। लेकिन ईर्ष्या में दूसरे भाव उदित होते हैं, मेरे अतिरिक्त यह दूसरा कहाँ से आ गया? इस की भक्ति किसी न किसी ढ़ंग से भंग करनी चाहिए, ये ईर्ष्या के चिन्ह हैं। ईर्ष्यालु साधक, साधक कहलाने के योग्य नहीं, क्यूँ उनकी सारी की सारी साधना एक ही बात पर केंद्रित है – जिसके प्रति उसकी ईर्ष्या है, उनको नीचा कैसे दिखाना है। इसके अतिरिक्त कोई साधना नहीं है उनकी, राम राम भी जपते हैं, तो वह इसलिए नीचा दिखाने के साधन ढूँढने के लिए उनको बीच में से कैसे निकाला जाए। ईर्ष्याग्नि है – कैसी अग्नि? जैसे अँगीठी होती है, जलती है, अँगीठी के सम्पर्क में जो भी कोई आता है वह इतनी आसानी से जलता नहीं। कोई गलती से हाथ लगा देगा तो उसे जलन महसूस होगी। लेकिन अँगीठी तो स्वयं जल रही है, दुःखी हो रही है, अन्दर ही अन्दर जल रही है, नौबत यह आ जाती है कि थोड़ी देर बाद अँगीठी बदलने की आवश्यकता होती है। ईर्ष्यालु व्यक्ति की दशा, जिसके प्रति ईर्ष्या उसका कुछ बिगड़ेगा या नहीं लेकिन अपना ज़रुर बिगड़ जाएगा। कभी उदात्त नहीं हो पाओगे, कभी उन्नत नहीं हो पाओगे, यदि उन्नत हो भी जाओ तो पतन हो कर रहेगा। ये बातें सामान्य व्यक्तियों के लिए भी हैं और साधकों के लिए मुख्यता कही जाती हैं। सामान्य व्यक्ति साधक बने और साधक और ऊँचा साधक बने। इसे मत्सर भी कहते हैं। ऐसा कौन है जिसे मत्सर ने परेशान नहीं किया। संत महात्मा भी इससे ग्रस्त हैं, मेरे और अधिक शिष्य हों, उसके इतने शिष्य हैं, इसमें बाधा डालो, इसके अधिक शिष्य न बन सकें। ये उनका मत्सर है, मिथ्या आरोप लगाएँगे, दोष वर्णन करेंगे, उल्टा प्रचार करेंगे ताकि किसी ढंग से वह व्यक्ति सफलता को प्राप्त न कर सके, ये ईर्ष्या के चिन्ह।

संत नाभादास की एवं तुलसी दास की ईर्ष्या बड़ी प्रसिद्ध है। पूज्य गुरुदेव प्रायः यह कथा सुनाया करते

थे। सिद्ध चांगदेव ने, अपनी सिद्धियों के बल पर अपनी आयु 1400 वर्ष कर ली है, मरता ही नहीं। उस वक्त की बात है जब संत ज्ञानेश्वर 16 वर्ष के थे। प्रसिद्ध था, कि 16 वर्ष का बालक है पर, ज्ञानी है। चांगदेव उस के प्रति ईर्ष्यालु हो गए। मेरे होते हुए यह कल का छोकरा, ये ज्ञानी कहाँ से आ गया। सोचा पत्र लिखूँ, पूजनीय लिखा नहीं जा सकता, छोटा है, चिंरजीवी भी नहीं लिखा जा सकता, लोग कहते हैं ज्ञानी है। कोरा पत्र भेज दिया। कोरा कागज़ देख, जो नहीं लिखा हुआ था संत ज्ञानेश्वर ने वह भी पढ़ लिया। कहा महाराज आपकी आयु तो हो गई 1400 वर्ष, पर हो कोरे के कोरे। बड़ा गुस्सा आया, अपनी सिद्धियों का प्रदर्शन करने के लिए बाघ की सवारी कर, विषैले सर्प गले में डाल कर चले संत ज्ञानेश्वर से मिलने, दर्शन करने नहीं, छोटे आदमियों के लिए ऐसे शब्द प्रयोग नहीं करते। सिद्धियों का प्रदर्शन करके नीचा दिखाऊँगा— ईर्ष्या के चिन्ह! संत—ज्ञानेश्वर को पता चला, चांगदेव मिलने के लिए आ रहे हैं। उस वक्त चौके में बैठे थे, कहा, "चल चौके चांगदेव के पास।" परमेश्वर की कृपा से चौका चल पड़ा, ऊपर संत ज्ञानेश्वर बैठे हुए। चांगदेव के पास पहुँचे, चौके पर बैठे—बैठे, बहुत शर्मिंदगी हुई। मैंने तो जीवित प्राणियों को नियंत्रित किया हुआ है, उन पर सिद्धि प्राप्त की है, ये कल का छोकरा, इसने तो बेजान पर सिद्धि प्राप्त की हुई है। ईंट पत्थर तो जड़ है, उसने उस पर भी सिद्धि प्राप्त की हुई है। कहते हैं चांगदेव ने संत ज्ञानेश्वर से क्षमा माँगी, दीक्षा लेकर शिष्य बने। अवश्य कल्याण हुआ होगा।

यह क्रोध, भी अग्नि है जो हमारे भीतर की कमाई को सुखा देती है, ऐसी अग्नि जो हमें भीतर ही भीतर जलाने वाली है। क्रोधी, जो हमारी मति को विकृत करे वह क्रोध। जो हमारे भीतर शान्ति का स्रोत है, उसके बहने में जो रुकावट डाले — वह क्रोध। दो बातें याद रखने योग्य। किन कारणों से क्रोध आता है, अनेक कारण हैं, मुख्यता यूँ कहिएगा, हमारे भीतर यह मान्यता आ जाती है कि संसार हमारे अनुसार चले, भगवान् हमारे अनुसार चले, जब अपेक्षा रखने लग जाते हैं तो हर अपेक्षा तो पूरी नहीं होती, जब अपूर्ण रहती है तो क्रोध का विस्फोट होता है। भगवान् श्री कृष्ण कहते हैं, काम ही क्रोध है। मानो एक आवेग है जो एक रुप से दूसरे रुप में परिणित हो जाता है। काम का आवेग दूसरा रुप धारण कर लेता है। रजोगुण इस का प्रमुख कारण है। हम जैसे अनपढ़ को क्या पता यह रजोगुण क्या होता है। एक बात सिद्ध है जब हमारे अहंकार को ठेस पहुँचती है, तो क्रोध का विस्फोट होता है, जब हमारी बात नहीं मानी जाती, जब हमें नीचे किया जाता है, जब हम कुछ चाहते हैं और होता कुछ और है तो इस बात पर क्रोध आ जाता है। घर में बाप चाहता है बच्चे मेरा कहना मानें, बच्चे कहते हैं बाप बूढ़ा हो गया है अब हमारे अनुसार चले तो क्रोध आएगा और क्रोध आएगा तो अशान्ति होगी। क्रोधी के घर में कभी शान्ति नहीं रह सकती, वहाँ एक चीज़ ही रहती है वह है अशान्ति। भय भी रहता है, निराशा, चिन्ता, व्याकुलता भी रहती हैं। अशान्ति होती है तो शान्ति नहीं, इसका अर्थ वहाँ परमात्मा नहीं।

किन कारणों से क्रोध आता है, अनेक कारण हैं, मुख्यता यूँ कहिएगा, हमारे भीतर यह मान्यता आ जाती है कि संसार हमारे अनुसार चले, भगवान् हमारे अनुसार चले, जब अपेक्षा रखने लग जाते हैं तो हर अपेक्षा तो पूरी नहीं होती, जब अपूर्ण रहती है तो क्रोध का विस्फोट होता है।

ज्ञान की दृष्टि से देखा जाए तो जब हम सत्य से दूर होते हैं तो क्रोध आता है। क्या अर्थ है इसका? देवर्षि नारद को भगवान् पर क्रोध आ गया और शाप दे दिया। गाली तो हम भी देते हैं, यदि हम में समर्थ हो तो शाप देने में कोई परहेज़ नहीं करेंगे। माँ पार्वती जो कथा सुन रही हैं —बड़ी चकित कि, देवर्षि नारद ने शाप दे दिया, इतने बड़े ज्ञानी—भक्त ने, हर वक्त परमात्मा का सिमरन करने वाले, उन्होंने क्रोध के आवेश में शाप दे दिया। भगवान् शिव मुस्कारा कर कहते हैं, री पार्वती ! इस संसार में न कोई मूर्ख है, न ज्ञानी, जो मेरे राम जिस से जिस क्षण जो करवाना चाहते हैं तदनुसार उसकी बुद्धि कर देते हैं, हो कर वही रहता है। जो इस सत्य को समझ जाता है उसके लिए क्रोध का कोई स्थान नहीं है। शक्ति तो एक ही काम कर रही है उस से आप कुछ भी करवा लीजिएगा। स्वाध्याय करें, जुआ खेलें, ताश खेलें, चोरी करें, व्याभिचार करें, अनाचार करें, दुराचार करें, या परमेश्वर का ध्यान लगाएँ, शक्ति तो सब कामों के पीछे एक ही है — चेतना, चेतन शक्ति परमेश्वर की शक्ति। ये सारा संसार राममय है, उस की इच्छा से ही यश मिल रहा है, अपयश मिल रहा है, उसकी इच्छा से ही कोई क्रोधी आप पर बरस रहा है, उसकी इच्छा से अपमान मिल रहा है तो फिर आगे से आपके क्रोधित होने का कोई स्थान नहीं रहता। यदि आप इस सत्य के समीप

हैं, कि ये सब कुछ तो परमेश्वर ही करवाने वाला है, परमेश्वर की इच्छा से ही सब कुछ होता है, तो क्रोध का कारण कुछ भी है, इसके आवेश को, इसके आवेग को सहन करना ही बुद्धिमता है। क्रोध में क्या होता है, आँखें लाल हो जाती हैं, भौहें फरकने लगती हैं, होंठ हिलने लग जाते हैं, शरीर में कपकपी आ जाती है, कम्पायमान हो जाता है शरीर, मानो जैसे जीवन में कोई विनाशकारी भूचाल आ गया है। ब्लड प्रेशर हाई (उच्चरक्तचाप) हो जाता है, मुँह लाल हो जाता है, होंठ फरकने लगते हैं, बुद्धि पर संयम नहीं रहता, व्यवहार पर अंकुश नहीं रहता, बिना सोचे समझे कौन सामने है हर एक के ऊपर बरस पड़ता है क्रोधी। क्रोधी व्यक्ति अपने आप के लिए भी अभिशाप है और दूसरों के लिए भी अभिशाप है। कालान्तर में ऐसा व्यक्ति संसार में अकेला पड़ जाएगा। क्या कह कर लोग त्यागते हैं–क्रोधी है किसी काम का नहीं है, डॉक्टर बहुत अच्छा है, अच्छी सर्जरी करता है, सब कुछ ठीक है लेकिन क्रोधी है, अतः बहुत सारे लोग ऐसे व्यक्ति के पास जाने में परहेज करते हैं, क्रोधी व्यक्ति अकेला रह जाता है। एसिडिटी हो जाती है, हार्ट प्रॉबलेम, ब्लड प्रेशर हो जाता है, अनेक समस्याएँ हो जाती हैं, नर्वस टैंशन के कारण नर्वस सिस्टम सारा का सारा खड–खड़ करने लग जाता है। भगवान् शिव क्रोध के ऊपर पार्वती से कहते हैं सब कुछ मेरे राम करवाने वाले हैं, जो उन्होंने करवाना होता है वह तदनुसार उस व्यक्ति की बुद्धि फेर देते हैं, इसलिए पार्वती मेरी प्रिय ! भवबन्धन को नाश करनेवाला राम नाम जपा कर। उस नाम को जप, जो इस संसार में हमारे आवागमन को बन्द करनेवाला है, खत्म करनेवाला है। सहनशीलता ही एक कारण दिखाई देता है जिससे आप इस विकार को जीत सकते हो। काम एवं क्रोध का त्याग करो, मानो उस आवेश को, उस आवेग को सहन करना सीखो।

तीन राजकुमार हैं, सात्यकि, बलदेव और वासुदेव। तीनों घोड़े पर सवार हो कर जँगल की यात्रा के लिए चले जाते हैं। एक निर्जन स्थान आ जाता है, घमासान जँगल आ जाता है, सायंकाल का समय भी हो गया है, रात्रि का प्रवेश होने वाला है। एक पेड़ के नीचे विश्राम करने लगे। तीनों बुद्धिमान हैं अतः कहा हम दो सोते हैं एक पहरा देगा। तीनों का सोना ठीक नहीं। दो सोते हैं, सात्यकि जागता है। पिशाच आता है, कहता, "ये जो दो सोए हैं इन्हें खाने दे, मैं तुझे छोड़ दूँगा"। सात्यकि कहता है, "इन्हें खाना है तो पहले मुझे मारना होगा"। लड़ाई हो जाती है सात्यकि थक जाता है, मार खाता है। तब तक बलदेव के जागने का समय हो गया, पिशाच भाग जाता है। बलदेव सारी हालत सुनता है, जो क्रोध की अग्नि में जल रहा है, आए तो सही मैं उसे मज़ा चखाऊँगा। पिशाच पुनः आया वही प्रस्ताव रखा, लड़ाई आरम्भ हुई उसने भी मार खाई और थका–मांदा सो गया। तीसरा राजकुमार जागा, सारी कथा सुन ली है। पिशाच पुनः आया, वही प्रस्ताव वासुदेव के आगे भी रखा है। इस व्यक्ति पर परमेश्वर की कृपा है, कोई प्रभाव नहीं पड़ता, चुप रहता है, पिशाच थोड़ा और उत्साहित होता है, उसकी मार पिटाई शुरु करता है पर वह हाथ नहीं उठाता, चुप रहता है, शांत रहता है। पिशाच का आकार घटता जाता है, उसकी शक्ति कम होती जाती है। ये वासुदेव को दिखाई दे रहा है, धीरे धीरे पिशाच रेंगता हुआ कीड़ा बन जाता है। अपनी जेब में से रुमाल निकाल कर उस में रख लेता है। यह पिशाच कौन है – क्रोध। जितना उसके साथ लड़ोगे उतना अधिक इसका आकार, विकार और बढ़ता जाता है, उतना शक्तिशाली होता जाएगा और जितना इसे सहन करोगे, जितना इस के प्रति शांत रहोगे उतना छोटा कीड़े जैसा हो जाएगा। जो पिशाच आपके सामने इतना विशाल और शक्तिशाली था, आज आपकी शान्ति के सामने, आपके मुख बन्द के सामने, सहनशीलता के सामने एक कीड़ा हो गया। कोई आप पर बरसता है तो भी शांत रहिएगा, आपको क्रोध का अवसर आता है तो भी शांत रहिएगा, यही एक साधन है अति शक्तिशाली जिससे क्रोध जैसे विकृत विकार के साथ निपटा जा सकता है। असहनशीलता का चिन्ह है– क्रोध और क्रोध के ऊपर वशीकरण आपकी सहनशीलता, आपकी उदारता, अध्यात्मिकता, क्षमाशीलता, आपकी महानता के चिन्ह हैं। जब आप दूसरे का अपमान सहते हैं मुस्कुरा कर, दूसरे का क्रोध सह लेते हैं तो घर, अन्तःकरण सब कुछ बैकुंठ जैसा शान्त धाम बन जाता है।

जितना उसके साथ लड़ोगे उतना अधिक इसका आकार, विकार और बढ़ता जाता है, उतना शक्तिशाली होता जाएगा और जितना इसे सहन करोगे, जितना इस के प्रति शांत रहोगे उतना छोटा कीड़े जैसा हो जाएगा। जो पिशाच आपके सामने इतना विशाल और शक्तिशाली था, आज आपकी शान्ति के सामने, आपके मुख बन्द के सामने, सहनशीलता के सामने एक कीड़ा हो गया।

(स्त्रोतः 'अध्यात्म अमृत', सितम्बर 2002)

Facebook Group: https://www.facebook.com/groups/shreeramsharnamnewdelhi/
Community page: https://www.facebook.com/ShreeRamSharnam.AmritvaniSatsang.NewDelhi

आध्यात्मिक विषय पर परम पूजनीय महाराज जी के उत्तर

(परम पूजनीय महाराज जी के साथ साधकों के पत्राचार के अंश)

प्र. महाराज जी, मेरी आध्यात्मिक उन्नति कैसे हो सकती है?

पूजनीय महाराज जी : 'राम' से भी ज्यादा शक्तिशाली और कृपामयी है 'राम नाम'। 'राम नाम' का जाप सतत् करें। नियमित रुप से सत्संग में भाग लें। सप्रेम जय जय राम।

प्र. पूजनीय महाराज जी, कौन सा सम्बन्ध सर्वोच्च होना चाहिए? संसार से या परमात्मा से?

पूजनीय महाराज जी : परमात्मा से सम्बन्ध शाश्वत, सत्य एवं सर्वोच्च है। अन्य सभी सम्बन्ध अनित्य हैं। जय जय राम।

प्र. महाराज जी, प्रार्थना के समय मन को विचरने से कैसे रोकें?

पूजनीय महाराज जी : 'राम नाम' और उसकी ध्वनि या राम की विलक्षणताओं का ध्यान करें। नियमित जाप करें। जय जय राम।

प्र. महाराज जी, सर्वशक्तिमय पर ध्यान लगाने की शक्ति प्रदान कीजिए।

पूजनीय महाराज जी : परमात्मा को अपना समय और सम्पूर्ण ज़िन्दगी दीजिए। आप अपनी साधना और उसका कार्य पूरी शुचिता से करते रहें। शुभकामनाएँ। जय जय राम।

प्र. महाराज जी, सांसारिक विचारों से कैसे बचें और प्रभु राम पर ध्यान कैसे लगाएँ?

पूजनीय महाराज जी : सप्रेम जय जय राम... प्रेम करने का अर्थ है निरन्तर उसका चिन्तन करना। ऐसा करना उसके अंग–संग रहना है–यानि सत्संग। उसके प्रति अनुराग पैदा करने का सत्संग ही एक मात्र उपाय है। जितना सम्भव हो उतनी कोशिश करना। आप पर सदैव कृपा बनी रहे।

प्र. महाराज जी, हमें व्रत रखना चाहिए या जाप करना चाहिए ?

पूजनीय महाराज जी : व्रत शरीर के लिए है–'राम नाम' का जाप आत्मा के लिए। यह सांसारिक वस्तुओं के लिए भी है।

प्र. महाराज जी, कृपया बताएँ कि सांसारिक और आध्यात्मिक जीवन के बीच संतुलन कैसे बनाएँ?

पूजनीय महाराज जी : अपने हृदय में आसीन प्रभु से सतत् तार जोड़ने पर ही हम संसार से निःसंग रह सकते हैं। जिस हृदय में प्रभु राम पहले से ही विराजमान हैं, वहाँ संसार को प्रवेश मत करने दीजिए। प्रभु कृपा करें। सप्रेम जय जय राम।

प्र. महाराज जी 'राम नाम' का जाप और अमृतवाणी जी का पाठ बोल कर करना चाहिए या मन में?

पूजनीय महाराज जी : दोनों तरह से, कोई अन्तर नहीं पड़ता। आवश्यक है कि ये दोनों होने चाहिए। जय जय राम।

(महाराज जी के उत्तर शब्दशः अनुवादित हैं जबकि प्रश्नकर्ता की गोपनीयता बनाए रखने के लिए प्रश्नों को आवश्यकतानुसार थोड़ा बहुत संशोधित किया गया है।) ■

अनुभूतियाँ

'मेरे महाराज जी को बर्थडे कार्ड'

परम पूजनीय श्री महाराज जी के जन्म दिवस के अवसर पर, देश–विदेश से बच्चे और बड़े कार्ड भेज कर श्री महाराज जी को शुभकामनाएँ भेजते हैं। हर वर्ष की तरह पिछले वर्ष, यानि 2013 में भी, एक सात–आठ वर्ष के बच्चे का मुम्बई से हाथ से बना हुआ कार्ड आया। यह बच्चा पहले भी कार्ड भेजता था। इस कार्ड को खोलने पर उसमें से दो लौंग निकले। लौंग देख कर आश्चर्य हुआ। परन्तु सायं उस बच्चे की माँ का फोन आया, (कि उसमें लौंग क्यों रखे गए)। उन्होंने बताया कि बच्चे ने कार्ड डालते वक्त लौंग रखने को बोला। पूछने पर कहा, "मम्मी ! श्री महाराज जी इतने देर से पानी में हैं तो उनको सर्दी लग गई होगी, इसलिए सर्दी ठीक करने के लिए वे लौंग खा लेंगे।"(इस बच्चे ने श्री महाराज जी की जल समाधि की वीडियो देखी थी।) ■

निर्माणाधीन श्रीरामशरणम् भवनों की प्रगति

देवास, मध्यप्रदेश में नवीनीकृत श्रीरामशरणम् का उद्घाटन 12 फरवरी 2014 को हुआ।

जबलपुर, मध्यप्रदेश में नवनिर्मित श्रीरामशरणम् का उद्घाटन 12 मार्च 2014 को हुआ। उद्घाटन समारोह के बाद नाम दीक्षा भी हुई।

गाँव बलाना, जिला कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश में श्री अमृतवाणी सत्संग हॉल का निर्माण कार्य पूर्ण हो गया है एवं उद्घाटन 27 अप्रैल को होगा।

फाज़लपुर, कपूरथला, पंजाब में श्रीरामशरणम् में हो रहा निर्माण कार्य सम्पन्न हो गया है।

नरोट मेहरा, पंजाब, में श्रीरामशरणम् का निर्माण कार्य अन्तिम चरण में है और उसकी विस्तार योजना भी विचाराधीन है।

रतनगढ़, राजस्थान में साधकों के ठहरने हेतु स्थान का निर्माण कार्य सम्पन्न हो गया है।

पीलीबंगा, जिला हनुमानगढ, राजस्थान में श्रीरामशरणम् का निर्माण कार्य प्रगति पर है।

नामरूप, आसाम में श्रीरामशरणम् का निमार्ण कार्य प्रारम्भ हो गया है।

तिब्बड़, जिला गुरदासपुर, पंजाब में श्रीरामशरणम् का निमार्ण कार्य प्रारम्भ हो गया है और चारदीवारी शीघ्र पूरी हो जाएगी।

विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम
जनवरी से मार्च 2014

साधना सत्संग, खुले सत्संगों एवं नाम दीक्षा का विवरण

हांसी, हरियाणा में 3 जनवरी से 6 जनवरी तक साधना सत्संग हुआ जिसमें 88 व्यक्तिों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

झाबुआ, मध्यप्रदेश में 11 से 13 जनवरी तक खुले सत्संग का आयोजन हुआ और जिसमें 6960 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

दिल्ली में 148 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

बानमोर, मध्यप्रदेश में 22 जनवरी को 127 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

ग्वालियर, मध्यप्रदेश में 24 से 27 जनवरी तक साधना सत्संग हुआ जिसमें 495 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

फरीदाबाद, हरियाणा में 26 जनवरी को 124 व्यक्तिों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

रोहतक, हरियाणा में 29 दिवस के अखण्ड जाप की पूर्ति पर 9 फरवरी को 491 व्यक्तिों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

देवास, मध्यप्रदेश में 12 फरवरी के खुले सत्संग में 292 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

इन्दौर, मध्यप्रदेश में 14 से 16 फरवरी तक खुला सत्संग हुआ जिसमें 252 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

बिलासपुर, हिमाचल प्रदेश में 21 से 23 फरवरी तक खुला सत्संग हुआ जिसमें 65 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

फाज़लपुर, कपूरथला, पंजाब में 1 से 2 मार्च तक खुला सत्संग हुआ जिसमें 64 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

'एक अंगवस्त्र के कारण'

एक साधु अपने गुरु से उपदेश लेकर, एकान्त में साधन भजन करने की इच्छा से किसी गाँव के समीप एक मैदान में एक झोंपड़ी बनाकर रहने लगे और साधना करते रहे। वे नित्य सवेरे उठते और स्नान कर के गीला कपड़ा और कोपीन झोंपड़ी के पास एक पेड़ पर सुखाने के लिए डाल देते थे। वे जब भिक्षा के लिए बाहर जाते थे, उस समय एक चूहा आकर उनके अंगवस्त्र को कुतर देता था। साधु दूसरे दिन गाँव से अंगवस्त्र माँग लेते थे। कुछ दिनों बाद साधु ने अंगवस्त्र झोंपड़ी के ऊपर सुखाने के लिए डाल दिया। जब वे भिक्षा लेकर लौटे तो देखा कि चूहों ने कोपीन के टुकड़े–टुकड़े कर दिए। वे बहुत तंग आकर सोचने लगा, अब मैं कहाँ से अंगवस्त्र माँगूं। दूसरे दिन गाँववालों को चूहों की करनी सुनाई तो गाँववालों ने कहा,''आपको रोज़–रोज़ कोपीन कौन देगा? आप एक काम कीजिए– झोंपड़ी में एक बिल्ली पाल लीजिए। उसके डर से चूहे नहीं आएँगे।''

साधु तत्काल ही गाँव से एक बिल्ली का बच्चा ले गए। उस दिन से बिल्ली के डर से चूहे आने बंद हो गए। इससे साधु बहुत आनन्दित हुए। वे बिल्ली को बहुत प्यार से व यत्न से पालने लगे। गाँव से दूध माँगकर उसे पिला देते। कुछ दिन बाद किसी भक्त ने कहा,''साधु जी, आपको तो रोज़ दूध चाहिए। आप एक काम कीजिए–एक गाय पाल लीजिए। आप स्वयं भी उसका दूध पीकर तृप्त होंगे और बिल्ली को भी पिला सकेंगे।'' थोड़े दिन बाद साधु ने एक दूध देने वाली गाय ले ली। अब साधु को दूध के लिए गाँव में नहीं जाना पड़ता था।

तत्पश्चात साधु ने उस गाय के लिए गाँववालों से चारा माँगना शुरु किया। तब गाँववालों ने उनसे कहा,''अपनी झोंपड़ी के आसपास की धरती पर हल चलवाइए, तो घास पात के लिए आपको गाँव में भिक्षा नहीं माँगनी पड़ेगी।'' नादान साधु ने पास वाली ज़मीन पर कृषि शुरु कर दी। इस काम के लिए धीरे–धीरे उनको आदमी रखना पड़ा। फसल आदि जब एकत्र होने लगी तो उसको रखने के लिए गोदाम भी बनाया गया। इस तरह धीरे –धीरे वह साधु एकदम गृहस्थों की भाँति बड़े व्यस्त होकर अपने दिन व्यतीत करने लगे।

कुछ दिनों बाद साधु के गुरु जी वहाँ आ पहुँचे। उन्होंने यह सब धन सम्पति देख कर नौकर से पूछा,''यहाँ एक त्यागी साधु झोंपड़ी में रहते थे, वे अब कहाँ गए बता सकते हो?'' वह नौकर कुछ उत्तर न दे सका। अन्त में गुरुजी ने स्वयं ही अपने शिष्य को ढूँढ कर पूछा, ''वत्स ! यह सब क्या है?'' शिष्य लज्जित होकर गुरु जी के चरणों में गिर पड़ा और बोला,''महाराज ! यह सब एक कोपीन के लिए हुआ।'' शिष्य ने एक–एक करके सारी घटनाएँ गुरुजी को कह सुनाईं। श्री गुरुजी के दर्शन से शिष्य की सारी आसक्ति नष्ट हो गईं। तत्क्षण सब धन सम्पति त्यागकर गुरुजी का अनुगमन किया।

पूज्य श्री महाराज जी श्री रामकृष्ण परमहंस की यह कथा हम सबको यह समझाने के लिए सुनाते कि घर बार छोड़ने की आवश्यकता नहीं। केवल मन ही मोड़ना होता है। ''घर बार का तो त्याग कर दिया। संन्यास लेकर एकान्तवास करके वहाँ एक और दुनिया बसा ली।'' संन्यास केवल मन से लेना होता है। अनासक्त जीवन व्यतीत करते हुए, अपने कर्तव्यों को पालन करें। घर में रहकर भी कुछ दिनों के लिए संकल्प लेकर एकान्तवास किया जा सकता है।

परम पूजनीय स्वामी सत्यानन्द जी महाराज के संस्मरण

आखिरी 1–2 साल में परम पूजनीय स्वामी सत्यानन्द जी महाराज के लिए भोजन के समय कुर्सी लग जाती थी। खाने के बाद अपने बर्तन साफ करने के लिए कुछ ही सज्जनों को दिया करते। एक दिन माननीय खोसला साहिब पर कृपा हुई। उन्होंने बर्तन देखे तो बिल्कुल साफ़ –स्वामी जी की ओर देखा तो स्वामी जी हँस रहे थे। कहने लगे अन्त में मैं चपाती का टुकड़ा रख लेता हूँ, जिससे कटोरी आदि साफ कर लेता हूँ, इससे एक तो अन्न *वेस्ट* नहीं होता दूसरे सफ़ाई भी आसान हो जाती है।

(परम पूजनीय महाराज जी की डायरी से)

श्रीरामशरणम् नई दिल्ली में नाम दीक्षा की तिथियाँ			
1	20 अप्रैल	रविवार	प्रात : 10.30 बजे
2	18 मई	रविवार	प्रात : 10.30 बजे

अन्य केन्द्रों पर नाम दीक्षा की तिथियाँ (अप्रैल से जून 2014)			
1	20 अप्रैल	रविवार	मण्डी
2	4 मई	रविवार	सूवा, फीज़ी
3	5 मई	सोमवार	लम्बाश, फीज़ी
4	6 मई	मंगलवार	नाडी, फीज़ी
5	7 मई	बुधवार	बा, फीज़ी
6	11 मई	रविवार	सिडनी, ऑस्ट्रेलिया
7	25 मई	रविवार	फरीदाबाद
8	26 जून	बृहस्पतिवार	सेलर्सबर्ग, अमेरिका
9	29 जून	रविवार	सेलर्सबर्ग, अमेरिका

साधना सत्संग (अप्रैल से जून 2014)			
1	11 से 16 अप्रैल	शुक्रवार से बुधवार	हरिद्वार
2	30 जून से 3 जुलाई	सोमवार से बृहस्पतिवार	हरिद्वार

खुले सत्संग (अप्रैल से जून 2014)			
1	5 से 6 अप्रैल	शनिवार व रविवार	रोहतक
2	20 अप्रैल	रविवार	मण्डी
3	3 से 4 मई	शनिवार व रविवार	सूवा, फीज़ी
4	9 से 11 मई	शुक्रवार से रविवार	सिडनी, ऑस्ट्रेलिया
5	26 से 29 जून	बृहस्पतिवार से रविवार	सेलर्सबर्ग, अमेरिका

पूर्णिमा की तिथियाँ (अप्रैल से जून 2014)		
1	15 अप्रैल	मंगलवार
2	14 मई	बुधवार
3	13 जून	शुक्रवार

नोट : मनाली में 15 से 16 जून तक होने वाला खुला सत्संग अब 15 -16 अगस्त को होगा।

यदि आप 'सत्य साहित्य' की इस प्रति को नहीं रखना चाहते,
तो कृपया इसे अपने स्थानीय केन्द्र या निकटतम श्रीरामशरणम् को लौटा दें।

प्रकाशक मुद्रक श्री अनिल दीवान द्वारा श्री स्वामी सत्यनन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, 8 ए रिंग रोड, लाजपत नगर–IV नई दिल्ली. 110024 से प्रकाशित एवं रेव इंडिया, ए–27, नारायणा औद्योगिक ऐरिया, फेज़ 2, नई दिल्ली 110028 से मुद्रित, संपादकः मेधा मलिक कुदेसिया एवम् मालविका राय

©श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, नई दिल्ली

ईमेल: shreeramsharnam@hotmail.com
वेबसाईट: www.shreeramsharnam.org
Facebook Group: https://www.facebook.com/groups/shreeramsharnamnewdelhi/
Community page: https://www.facebook.com/ShreeRamSharnam.AmritvaniSatsang.NewDelhi

आर. एन. आई. न० के लिए आवेदन दिया गया है।